छुटकारे का इतिहास – भाग 1

अध्याय 7: प्रायश्चित का आश्चर्य

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मैं आपको मेरे साथ लैव्यवस्था 16 पर आने का निमंत्रण देता हूँ। आप जानते हैं, कुछ लोग सोचते और कहते हैं कि लैव्यवस्था नीरस है। मेरा सोचना है कि हम इस दावे से असहमत हो सकते हैं। हाँ, कुछ बिन्दू हैं जहाँ आप ऊब सकते हैं, परन्तु सम्पूर्ण रूप में, जब आप लैव्यवस्था को पढ़ते हैं तो यह आपको सतर्क रहने पर मजबूर करती है, और कई बिन्दुओं पर तो इसमें इतनी अधिक सूचना है कि आप सोचते हैं यह पवित्रशास्त्र में क्यों है? और आज मैं चाहता हूँ कि हम इसे देखें यह पवित्रशास्त्र में क्यों है।

लैव्यवस्था 16 में जाने से पहले, मैं चाहता हूँ कि हम एक पल के पीछे हटकर सोचें पिछले कुछ महीनों में हमने क्या किया है, हम इस बिन्दू पर कैसे आए हैं और अगले कुछ महीनों में हम कहाँ जाने वाले हैं। बाइबल को समयक्रम के अनुसार पढ़ने का कारण है कि हम पवित्रशास्त्र की सम्पूर्ण कहानी को देखना चाहते हैं, और इसलिए मैं बार–बार वापस लौटकर यदि दिखाना चाहता हूँ कि किस प्रकार प्रत्येक पद जिसे हम देखते हैं वह छुटकारे की सम्पूर्ण कहानी के अनुरूप है।

और इसलिए हमने प्रस्तावना, सृष्टि से शुरूआत की, और हमने उत्पत्ति 1–11 को देखा, ये 11 अध्याय वास्तव में बाइबल में आने वाली हर बात का आधार तैयार करते हैं, और इस कहानी में जो कुछ होता है वह वास्तव में उत्पत्ति 1–11 की घटनाओं पर वापस जाता है। इसलिए शुरूआत में ही हमारे पास यह आधार, प्रस्तावना है, और फिर इसे हम कहानी की पुस्तक के रूप में अध्यायों के साथ, हिस्सों में देखते हैं। और भाग 1, वाचा के लोगों से छुटकारे का वायदा, और इस शीर्षक का कारण है कि मैं चाहता हूँ कि हम इस बात को देखें कि परमेश्वर वाचाओं के द्वारा अपने लोगों से व्यवहार करता है, और यह अपने लोगों के साथ परमेश्वर के संबंध की समझ का हिस्सा है। इसे हम पहले भी देख चुके हैं जब परमेश्वर कहता है, और इसे हम शेष पवित्रशास्त्र में भी देखेंगे, मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा; तुम मेरे लोग होओगे। परमेश्वर अपने लोगों के साथ संबंध में प्रवेश करता है, और इस बिन्दू तक हमने वास्तव में वाचा की चार तस्वीरों को देखा है।

इसका आरम्भ आदम से हुआ, सृष्टि की वाचा। अब वाचा शब्द का वास्तव में उत्पत्ति 1, 2 और 3 अध्यायों में प्रयोग नहीं किया गया है, लेकिन वाचा के सारे अवयव वहाँ मौजूद हैं, परमेश्वर अपने उद्देश्य के लिए अपने वायदों के द्वारा अपने लोगों से संबंध स्थापित करता है, और हम उसे देखते हैं। अपने लोगों, आदम और हव्वा से परमेश्वर के संबंध की तस्वीर, और फिर हम देखते हैं कि मनुष्य के गिरने के साथ, उत्पत्ति 3 में पाप संसार में प्रवेश करता है, परन्तु वहाँ भी, उत्पत्ति 3:15 में, हम छुटकारे के वायदे को देखते हैं। और वह पहली तस्वीर है। दूसरी तस्वीर है नूह के साथ, सुरक्षा की वाचा। यहाँ पहली बार हम पवित्रशास्त्र में वाचा शब्द के वर्णन को देखते हैं, उत्पत्ति 9 जहाँ जल–प्रलय के बाद परमेश्वर कहता है मैं इसे दोबारा नहीं करूँगा। मैं इस तरह पृथ्वी को नष्ट नहीं करूँगा। मैं अपने लिए एक प्रजा को सुरक्षित रखूँगा, परमेश्वर और नूह के बीच वाचा की यह भाषा।

फिर आप उत्पत्ति 12, 15, और 17 पर आते हैं अब्राहम के साथ, वायदे की वाचा। इसी के बारे में हमने बात की। उस सप्ताह मैं भारत में था, पृष्ठभूमि में कुछ चिड़ियों के चहकने की आवाज आ रही थी, और हमने उत्पत्ति 12, 15, और 17 को देखा। हमने देखा परमेश्वर अब्राहम और उसके बाद उसके वंश इसहाक और याकूब को वायदे देता है। मैं तुझे आशीष दूँगा, तेरे वंश को आशीष दूँगा। मैं तुझे एक देश में पहुँचाऊँगा, और तू सारे लोगों के लिए मेरी आशीष का माध्यम होगा। यह इस्राएल के लोगों का, याकूब का निर्माण है, और हम देखते हैं कि यह हमें निर्गमन में लाता है जहाँ परमेश्वर मूसा के पास आता है, और हम इस वाचा को देखते हैं, व्यवस्था की वाचा। पिछले कुछ सप्ताहों में हमने इसी के बारे में पढ़ा और चर्चा की जब परमेश्वर अपने लोगों को सीनै पर्वत पर लाता है, और वह अपनी महिमा को उन पर प्रकट करता है, और वह उन्हें अपनी व्यवस्था देता है। लैव्यवस्था में भी हम वास्तव में इसी को प्रकट कर रहे हैं क्योंकि यह सीनै पहाड़ की तलहटी में होता है।

हमने चार वाचाओं को देखा है। मैं चाहता हूँ कि हम देखें कि परमेश्वर इसी तरह अपने लोगों से व्यवहार करता है, और मैं चाहता हूँ कि हम यह भी देखें कि ये वाचाएँ एक–दूसरे पर निर्मित हैं। वे एक के बाद दूसरी का खण्डन या इनकार नहीं करती हैं। यह ऐसा नहीं है, कि अब परमेश्वर ने मूसा के साथ वाचा बाँधी, और उसी समय उसने अब्राहम के साथ की वाचा को खिड़की से बाहर फेंक दिया। यह एक–दूसरे पर निर्मित है, और हम इसे देखेंगे। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि हर बार जब हम नये नियम की ओर संकेत करते हैं, जो एक नियम है, वाचा है, पुराना नियम, नया नियम। जब कभी हम नई वाचा में मसीह की ओर संकेत करते हैं, तो ऐसा नहीं है कि मसीह दृश्य में उभर कर आता है और उन बातों का खण्डन करता है जिन्हें हमने पुराने नियम में देखा है। इसके विपरीत, पुराने नियम की सारी बातें प्रगति कर रही हैं और उस पूर्णता की ओर विकसित हो रही हैं जो मसीह में आती है और जिसे हम नई सृष्टि में देखते हैं। और हम

उसी तरफ जा रहे हैं, और मैं चाहता हूँ कि हम इन वाचाओं को उस सन्दर्भ में देखें। वह पहला भाग है, वाचा के लोगों से छुटकारे की वाचा का वायदा।

अब इस सप्ताह हम कहानी में एक प्रकार से बदलाव करने वाले हैं, और कुछ समय के लिए हम किसी नई वाचा को नहीं देखेंगे। हम मूसा की वाचा की इस तस्वीर को खुलते हुए देखेंगे जो भाग 2 कहलाती है, देश की व्यवस्था क्योंकि अब से पुनरूत्थान के पर्व (ईस्टर) तक हम वास्तव में दो आयामों को देखेंगे। पहला, व्यवस्था का दिया जाना, जो वास्तव में लैव्यवस्था के बारे में है, याजकों की व्यवस्था, साथ ही व्यवस्थाविवरण भी; व्यवस्थाविवरण व्यवस्था को याद करने के लिए है। और फिर हम देश की ओर यात्रा को देखेंगे। हम देखेंगे कि परमेश्वर के लोग उस देश की ओर जाते हैं जिसका वायदा परमेश्वर ने उन से किया है, और केवल एक नजर, वे सबसे सीधे मार्ग से उस देश में नहीं जायेंगे, और वास्तव में, ये दोनों आपस में संबंधित हैं क्योंकि प्रतीत होता है कि व्यवस्था के प्रति उनके आज्ञापालन और/या अनाज्ञाकारिता उस देश की उनकी यात्रा से संबंधित है।

और इसलिए, मैं चाहता हूँ कि हम अगले कुछ सप्ताह व्यवस्था और देश के बीच इस व्यवहार को देखें। अब यह लैव्यवस्था से आरम्भ होता है, और मैं चाहता हूँ कि हम केन्द्र को देखें, लैव्यवस्था 16 में लैव्यवस्था का धर्मविज्ञानी केन्द्र और प्रायश्चित का दिन। यह शब्द, प्रायश्चित, एक धर्मविज्ञानी शब्द है, और ऊपर आपने इसे देखा, प्रायश्चित का आश्चर्य। मैं इस पर बल देना चाहता हूँ कि इसी के द्वारा परमेश्वर के लोग परमेश्वर के साथ एक बनते हैं और उनको परमेश्वर के साथ मेल होता है और वे संबंध में प्रवेश करते हैं, और यही वह सवाल है जिसे निर्गमन ने हमारे साथ छोड़ा था। लैव्यवस्था निर्गमन की ही निरन्तरता है। निर्गमन 40, हम परमेश्वर की इस तस्वीर को देखते हैं कि वह अपनी महिमा में अपने लोगों के साथ वास करता है, और यह सवाल उठता है, यह कैसे संभव है? पापी लोग परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे रह सकते हैं?

और लैव्यवस्था की पुस्तक उस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता करेगी, और यहाँ पर मैं चाहता हूँ कि हम इस बात को समझें कि लैव्यवस्था में आपके जीवन के लिए बहुत से निहितार्थ हैं, और आपको भी अपने जीवन में यही सवाल पूछने की आवश्यकता है। आप इस संसार में, अपने पाप में, उस परमेश्वर के साथ कैसे संबंध बना सकते हैं जो पवित्र है? और लैव्यवस्था हमें जो उत्तर देती है उसके हमारे लिए बड़े निहितार्थ हैं कि हम कैसे ब्रह्माण्ड के परमेश्वर के साथ संबंध में रह सकते हैं या नहीं क्योंकि यह हमें प्रायश्चित के मुद्दे पर लाता है। हम लैव्यवस्था 16 को पढ़ेंगे, यह एक लम्बा अध्याय है, और यह संभवतः आपको पुनः वो याद दिलाएगा जो आप पहले ही पढ़ चुके हैं, और मैं चाहता हूँ कि हम इसे पढ़ें। मैं चाहता

हूँ कि आप इन विवरणों की कल्पना करें, इन दृश्यों की कल्पना, और यह करें; जब भी आपको प्रायश्चित शब्द दिखाई देता है उसे रेखांकित करें। मैं चाहता आप इसे देखें कि यह किस प्रकार इस पूरे पद्यांश में फैला हुआ है। इसलिए जब भी आप प्रायश्चित को देखते हैं तो उसे रेखांकित करें।

लैव्यवस्था 16:1: जब हारून के दो पुत्र यहोवा के सामने समीप जाकर मर गए, उसके बाद यहोवा ने मूसा से बातें की; और यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने भाई हारून से कह कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चितवाले ढ़कने के आगे, बीचवाले पर्दे के अन्दर, पवित्रस्थान में हर समय प्रवेश न करे, नहीं तो मर जाएगा; क्योंकि मैं प्रायश्चितवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाई दूँगा। जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिए एक बछड़े को और होमबलि के लिए एक मेंढ़े को लेकर आए। वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा, और अपने तन पर सनी के कपड़े की जाँघिया पहिने हुए, और सनी के कपड़े का कटिबन्द, और सनी के कपड़े की पगड़ी भी बाँधे हुए प्रवेश करे; ये पवित्र वस्त्र हैं, और वह जल से स्नान करके इन्हें पहिने। फिर वह इस्राएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिए दो बकरे और होमबलि के लिए एक मेढ़ा ले।

और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिए होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिए प्रायश्चित करे। और उन दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने खड़ा करे; और हारून दोनों बकरों पर चिट्ठियाँ डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिए और दूसरी अजाजेल के लिए हो। और जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले उसको हारून पापबलि के लिए चढ़ाए; परन्तु जिस बकरे पर अजाजेल के लिए चिट्ठी निकले वह यहोवा के सामने जीवित खड़ा किया जाए कि उस से प्रायश्चित किया जाए, और वह अजाजेल के लिए जंगल में छोड़ा जाए।

हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिए होगा समीप ले आए, और उसको बलिदान करके अपने और अपने घराने के लिए प्रायश्चित करे। और जो वेदी यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर, और अपनी दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले पर्दे के भीतर ले आकर, उस धूप को यहोवा के सम्मुख आग में डाले, जिससे धूप का धूआँ साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित के ढकने के ऊपर छा जाए, नहीं तो वह मर जाएगा; तब वह बछड़े के लहू में से कुछ लेकर पूर्व की ओर प्रायश्चित के ढकने के ऊपर अपनी उंगली से छिड़के, और फिर उस लहू में से कुछ उंगली के द्वारा उस ढकने के सामने भी सात बार छिड़क दे।

फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिए होगा बलिदान करके उसके लहू को बीचवाले पर्दे के भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछड़े के लहू से उसने किया था ठीक वैसा ही वह बकरे

के लहू से भी करे, अर्थात् उसको प्रायश्चित के ढकने के ऊपर और उसके सामने छिड़के। और वह इस्राएलियों की भाँति भाँति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिए प्रायश्चित करे; और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग उनकी भाँति भाँति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिए भी वह वैसा ही करे। जब हारून प्रायश्चित करने के लिए पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब से जब तक वह अपने और अपने घराने और इस्राएल की सारी मण्डली के लिए प्रायश्चित करके बाहर न निकले तब तक कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे। फिर वह निकल कर उस वेदी के पास जो यहोवा के सामने है जाए और उसके लिए प्रायश्चित करे, अर्थात् बछड़े के लहू और बकरे के लहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए। और उस लहू में से कुछ अपनी उंगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़ककर उसे इस्राएलियों की भाँति भाँति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे।

जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिए प्रायश्चित कर चुके, तब जीवित बकरे को आगे ले आए; और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिए तैयार हो जंगल में भेज के छुड़वा दे। वह बकरा उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निर्जन स्थान में उठा ले जाएगा; इसलिए वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे।

तब हारून मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी के वस्त्रों को पहने हुए उसने पवित्रस्थान में प्रवेश किया था उन्हें उतारकर वहाँ पर रख दे। फिर वह किसी पवित्र स्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहिन ले, और बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर अपने और जनता के लिए प्रायश्चित करे। और पापबलि की चरबी को वह वेदी पर जलाए। और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल के लिए छोड़कर आए वह भी अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे। और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिनका लहू पवित्रस्थान में प्रायश्चित करने के लिए पहुँचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुँचाए जाएँ; और उनका चमड़ा, मांस, और गोबर आग में जला दिया जाए। और जो उनको जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश करने पाए।

तुम लोगों के लिए यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम काज न करे; क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिए तुम्हारे निमित्त

प्रायश्चित किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे। यह तुम्हारे लिए परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख देना; यह सदा की विधि है। और जिसका अपने पिता के स्थान पर याजक पद के लिए अभिषेक और संस्कार किया जाए वह याजक प्रायश्चित किया करे, अर्थात् वह सनी के पवित्र वस्त्रों को पहनकर, पवित्रस्थान, और मिलापवाले तम्बू, और वेदी के लिए प्रायश्चित करे; और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिए भी प्रायश्चित करे। और यह तुम्हारे लिए सदा की विधि होगी कि इस्राएलियों के लिए प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापों के लिए प्रायश्चित किया जाए। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी हारून ने किया।

अभी क्या हुआ, और यह महत्वपूर्ण क्यों है? लैव्यवस्था 16 में मैं आपको जो दिखाना चाहता हूँ, और वास्तव में लैव्यवस्था की सम्पूर्ण पुस्तक में, चार सत्य हैं जो मैं सोचता हूँ, और मेरा विश्वास है कि लैव्यवस्था 16 और सम्पूर्ण पुस्तक उसे हमारे दिलों और मनों में बैठाना चाहते हैं – चार अतुल्य महत्वपूर्ण सत्य। पहला, परमेश्वर पवित्र है। यहोवा पवित्र है। लैव्यवस्था की पुस्तक में, 90 से अधिक बार पवित्रता का वर्णन किया गया है। यह सारी पुस्तक में है। परमेश्वर की पवित्रता, कैसे परमेश्वर के लोगों से अपेक्षित है कि वे उसकी पवित्रता को प्रतिबिम्बित करें, यह तथ्य कि, जिस प्रकार हमने बात की, वह पूर्णतः शुद्ध है, पूर्णतः अलग, पूर्णतः अद्वितीय, इत्यादि। वह असीमित रूप से भला, असीमित रूप से पवित्र, असीमित रूप से आदरणीय है। इसे हम यहाँ लैव्यवस्था 16 में शुरूआत से ही देखते हैं जब सन्दर्भ में उस समय की ओर ले जाता है जब हारून के पुत्र यहोवा के समीप गए और मर गए। क्यों? क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से उसकी पवित्रता के अनुरूप व्यवहार नहीं किया। इसी कारण वे मर गए। जल्दी से लैव्यवस्था 10 पर जाएँ। यह लैव्यवस्था 10:1 की कहानी है जहाँ हारून के पुत्र नादाब और अबीहू अति पवित्र स्थान में जाते हैं, अनाधिकृत आग अर्पित करते हैं, और सुनें क्या होता है। "तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान लिया, और उनमें आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया। तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए। तब मूसा ने हारून से कहा," – इसे सुनें। "यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था कि जो मेरे समीप आए, अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे। और हारून (पिता) चुप रहा।"

इस तथ्य के निहितार्थ ये हैं कि परमेश्वर पवित्र है। हम परमेश्वर के साथ औपचारिक नहीं रह सकते हैं। वह पवित्र है, इसलिए उसकी पवित्रता हमारे अन्दर एक श्रद्धापूर्ण, स्वस्थ, प्रेरणास्पद भय का आह्वान करती है। जब आप परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं, लैव्यवस्था बताती है, आप पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं, और आप औरचारिक रूप से नहीं आ सकते हैं या इसे हल्के में नहीं ले सकते हैं। अब, हमें यहाँ

पर सावधान रहना है कि हम यहाँ से सीधे इसे लागू न करें और ऐसा न सोचें। हम परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं और हमें औपचारिकतावश नहीं आना है। आज हम अति पवित्र स्थान में उस प्रकार नहीं आते हैं जैसा वे पुराने नियम में आते थे। इसके बारे में हमने पिछले सप्ताह बात की थी, परन्तु सत्य यहाँ हमारे लिए कहीं अधिक गहरा और बड़ा है, उन वास्तविकताओं के कारण जिनके बारे में हमने पिछले सप्ताह बात की थी, भाइयो और बहनो, परमेश्वर की अति पवित्र उपस्थिति आप में वास करती है। मसीही लोग जिन में पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति है वे इसे हल्के में, औपचारिक रूप में नहीं लेते हैं। यह एक अद्भुत–प्रेरणास्पद बात है। यह एक स्वस्थ भय, भय का आह्वान करने वाला यथार्थ है जो हम पर छा जाना चाहिए, जिसके प्रति हम कभी ठण्डे या कठोर न बनें। हम परमेश्वर के साथ औपचारिक नहीं हो सकते हैं। हमें परमेश्वर के सम्मुख पश्चातापी होना चाहिए।

बिन्दू यह है, लैव्यवस्था 16 की यह सभा, यहोवा मूसा से कह रहा है हारून से कह कि उसे मेरी उपस्थिति में कैसे आना है, और परमेश्वर बताता है, और फिर अध्याय 16 के अन्त में जाएँ, पद 29 जब वह पूरे दिन के पश्चाताप की तस्वीर को संक्षेप में बताता है। सुनें वह क्या कहता है, "तुम लोगों के लिए यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को" – यहाँ प्रयुक्त भाषा को देखें। परमेश्वर कहता है, "तुम अपने अपने जीव को दुःख देना" – अपने जीव को दुःख देना। पद 31 में भी यही लिखा है, "यह तुम्हारे लिए परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख देना।" इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है अपने आप का दमन करना या स्वयं को नम्र करना। यह वही शब्द है जिसका प्रयोग निर्गमन के आरम्भ में यह बताने के लिए किया गया है कि परमेश्वर के लोग मिस्र में कैसी पीड़ा में थे, और यथार्थ यह है कि परमेश्वर की पवित्रता मुझे और आपको परमेश्वर के सम्मुख नम्र बनाती है, तोड़ती है, इस वास्तविकता को अंगीकार कराती है कि परमेश्वर महान है। यह पुराने नियम की आराधना की तस्वीर है जिसे हम दूसरे बिन्दुओं में देखते हैं। यह एज्रा मुँह के बल पड़ा है, हाथ फैलाकर परमेश्वर के सम्मुख कह रहा है, "आप अत्यधिक महान हैं। मैं आपकी ओर देखने में भी लज्जित हूँ।" यशायाह अध्याय 6 में, "मुझ पर हाय। मैं आपकी उपस्थिति में रहने के लायक भी नहीं हूँ।"

और मेरा सोचना है कि यहाँ हमारे लिए एक वचन है, हमारे जीवनों में भी, साथ–साथ यह भी कि इस परमेश्वर की आराधना के लिए एकत्रित होने का हमारे लिए क्या मतलब है क्योंकि यथार्थ यह है कि हमारे समय में जब कभी हम आराधना में शामिल होते हैं, तो वहाँ अक्सर अत्यधिक उत्सव मनाने की गुंजाइश होती है और अच्छे गाने होते हैं, और हम ताली बजाते हैं, नाचते हैं, गाते हैं, जो होना भी चाहिए। साथ ही, पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में पाप के कारण टूटने और नम्र होने और रोने का भी स्थान है जो आज हमारे लिए अनजाना है। हमें इससे उबरने की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि वास्तविकता यह है कि यदि

नम्रता और टूटेपन का हमारी आराधना में कोई स्थान नहीं है, तो परमेश्वर का हमारी आराधना में कोई स्थान नहीं है। परमेश्वर पवित्र है। हम उसके साथ औपचारिक नहीं रह सकते हैं। हमें उसके सम्मुख पश्चातापी होना चाहिए।

दूसरा सत्य, चूंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिए, पाप घातक है। पाप घातक है। अब, हारून के पुत्र हमें स्पष्टतः यह दिखाते हैं। एक बार अनाधिकृत रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में गए, मर गए। लैव्यवस्था की पुस्तक की सम्पूर्ण तस्वीर के बारे में सोचें, और सोचें, सबसे पहले, हमारी पाप करने की प्रवृत्ति मजबूत है। लैव्यवस्था हमें यह दिखाती है। इसकी संरचना के बारे में सोचें। अध्याय 16 में इस बिन्दू तक, एक के बाद एक, कई अध्याय हैं जो बलिदानों का वर्णन करते हैं। यह एक कैलेण्डर, बलिदानों की सारणी के समान है, और फिर इसके ठीक बाद, 17–27 में, हम एक तस्वीर देखते हैं कि परमेश्वर पालन करने के लिए व्यवस्था, नागरिक, नैतिक व्यवस्था देता है। क्या यह रूचिकर नहीं है कि व्यवस्था देने से पहले परमेश्वर उन्हें बलिदानों के बारे में बताता है क्योंकि यथार्थ यह है कि वे नियमों को तोड़ेंगे। यह ऐसा ही है। पाप करने की, परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने की एक प्रवृत्ति है, और इसलिए यह आवश्यक है कि इस पुस्तक का आधा स्थान बलिदानों से भरे, और लैव्यवस्था हमें यह वास्तविकता दिखाती है, ऐच्छिक और अनैच्छिक पापों की यह तस्वीर। पाप केवल कुछ ऐसा नहीं है जो हम यहाँ या वहाँ करते हैं। पाप हमारे अस्तित्व के मूल में है। हमारा जन्म ऐसे स्वभाव के साथ हुआ है जो परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करता है, जो उसकी व्यवस्था से दूर हो जाता है। हम सब ऐसे हैं। हमारी प्रवृत्ति, हमारा झुकाव पाप के प्रति है। क्या आप इससे नफरत नहीं करते?

लैव्यवस्था हमें दिखाती है कि हम में पाप करने की प्रवृत्ति है और न केवल यह कि हमारी पाप करने की प्रवृत्ति मजबूत है, बल्कि लैव्यवस्था हमें बहुत स्पष्ट रूप से दिखाती है कि पाप का दण्ड कठोर है। क्या हम इसे लैव्यवस्था की पूरी पुस्तक में नहीं देखते हैं? केवल हारून के पुत्र ही नहीं, व्यभिचार; लैव्यवस्था में व्यभिचार का दण्ड क्या है? मृत्यु। इसकी एक पूरी सूची है, इसकी सजा, उसकी सजा, इसकी सजा मृत्यु है, मृत्यु, मृत्यु, मृत्यु। आप लैव्यवस्था 24 पर आते हैं, एक व्यक्ति, एक बार यहोवा के नाम की निन्दा करता है। उसके साथ हम क्या करें? उसे पत्थरवाह करो, पत्थरवाह करो। जो यहोवा के विरूद्ध बोले, यहोवा की निन्दा करे, उसे पत्थवाह करना है। परमेश्वर कहता है उसे पत्थरवाह करो। उसे पढ़ते समय, हम सोचते हैं क्या यह कुछ ज्यादा ही कठोर नहीं है? और यह केवल यहाँ लैव्यवस्था में ही नहीं है, पूरे पुराने नियम में है। लूत की पत्नी पीछे मुड़कर देखती है और तुरन्त ही मर जाती है। पीछे नजर डाली, और नमक का खम्भा बन गई, बस। अगले कुछ सप्ताहों में हम गिनती पर आयेंगे, हम एक व्यक्ति को देखेंगे जो सब्त के दिन लकड़ियाँ बीन रहा है, और इसके लिए उसे पत्थरवाह किया जाता है। बाद में हम पुराने नियम में

देखते हैं कि परमेश्वर के लोग वाचा के सन्दूक को इस रीति से ले जाते हैं जो उचित नहीं था, और जब वह गिरने वाला था, तब एक व्यक्ति उसे गिरने से बचाने के लिए हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ता है, और जब वह उसे पकड़ता है तो तुरन्त ही वह मर जाता है।

आप कहते हैं, हाँ, ये पुराने नियम की कुछ सनकी कहानियाँ हैं। यह नये नियम में भी है। प्रेरितों के काम 5, हनन्याह और सफीरा, कलीसिया में भेंट के संबंध में धोखा देने का प्रयास करते हैं, वे मर जाते हैं। यह कलीसिया उन्नति की अच्छी विधि नहीं है। लोग मरने लगते हैं और हम सोचते हैं कि ऐसा होने पर लोग वापस आयेंगे। क्या आप चकित नहीं हैं – हो सकता है आप इसे ऊँची आवाज में न कहें, परन्तु क्या आप ऐसा नहीं सोचते कि यह कुछ ज्यादा ही कठोर प्रतीत होता है? लकड़ियाँ बीनने के कारण पत्थरवाह करना, एक झूठ, और मौके पर ही मृत्यु, और हम सोचते हैं यह कठोर है – और हमारी इस सोच का कारण यह है कि हमारा पाप का दृष्टिकोण मनुष्य–केन्द्रित है, और हम सोचते हैं, यदि तुम मेरे विरूद्ध कुछ गलत बोलो, तो उसके कारण तुम मृत्यु के लायक नहीं हो, और तुम नहीं मरोगे। यदि तुम किसी की कोई बात न मानो, तो उसके कारण तुम मृत्यु के लायक नहीं बन जाते हो, परन्तु यहाँ पर हमें पता चलता है कि पाप की तीव्रता का निर्धारण कार्य में और कार्य के द्वारा नहीं होता है। पाप की तीव्रता का निर्धारण उस व्यक्ति के द्वारा किया जाता है जिसके विरूद्ध पाप किया गया है। इसके बारे में सोचें। यदि आप एक चट्टान के विरूद्ध पाप करते हैं तो आप ज्यादा दोषी नहीं हैं। यदि आप मनुष्य के विरूद्ध पाप करते हैं तो आप दोषी हैं। यदि आप परमेश्वर के विरूद्ध पाप करते हैं तो आप असीमित रूप से दोषी हैं – असीमित रूप से अनादर के दोषी हैं क्योंकि वह असीमित रूप से आदरणीय है।

इसके बारे में सोचें। इसी कहानी को हम शुरूआत से देखते आ रहे हैं। उत्पत्ति 3 में एक पाप, एक पाप और रोमियों 5 कहता है, "सब लोग दोषी ठहरे।" एक पाप – एक पाप से सम्पूर्ण तस्वीर की शुरूआत हुई। जो कुछ हम देखते हैं, इस संसार की बुराई, नैतिक और स्वाभाविक बुराई, सब की जड़ एक पाप है। उन्होंने फल का एक टुकड़ा खाया, और उनकी अनाज्ञाकारिता और घमण्ड, और उसके परिणामस्वरूप, विश्वयुद्ध और नरसंहार और भूकम्प और सुनामी और आतंकवाद और बीमारी और कैन्सर, सब एक पाप से, और आपने और मैं ने ऐसे हजारों पाप किए हैं, और लैव्यवस्था इसके बारे में स्पष्ट है। पाप की मजदूरी, क्या है? मृत्यु है। अनन्त मृत्यु, असीमित मृत्यु क्योंकि आपने एक असीम पवित्र परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है। परमेश्वर पवित्र है। पाप घातक है। मेरी प्रार्थना है कि लैव्यवस्था को पढ़ने के परिणास्वरूप हम आज के बाद पाप से पहले से कहीं अधिक नफरत करने लगें और पाप की गंभीरता को पहले से कहीं अधिक महसूस करें।

कुरनेलियस प्लेंटिंगा ने अपनी पुस्तक, 'नॉट द वे इट्स सपोस्ड टू बी' में लिखा, "पाप के बारे में जागरूकता, अनाज्ञाकारिता की गहन जानकारी और पाप का दर्दनाक अंगीकार हमारी परछाई हुआ करते थे। मसीही पाप से नफरत करते थे। वे इससे डरते थे। वे इससे दूर भागते थे। वे इस पर दुःखी होते थे। हमारे कुछ पूर्वज अपने पापों के कारण दुःखी हुए। क्रोध करने वाला व्यक्ति सोचता था कि क्या वह अब भी पवित्र भोज में शामिल हो सकता है। एक स्त्री जो वर्षों तक स्वयं से अधिक आकर्षक और बुद्धिमती बहन से ईर्ष्या करती रही वह सोचती कि क्या यह पाप उसके उद्धार को खतरे में डाल सकता है।" वे आगे कहते हैं, "वह परछाई धुँधली हो गई है। आजकल पाप करने का दोष अक्सर ऐसी आवाज में लगाया जाता है जो अन्दरूनी मजाक का संकेत देता है। एक समय, इस दोषारोपण में परमेश्वर के लोगों को हिलाने की सामर्थ थी।" हे परमेश्वर इस सप्ताह उस छोटे से छोटे पाप के घातक स्वभाव को समझने में हमारी सहायता कर जिससे हमारा सामना होता है और जिससे हमारी परीक्षा होती है। हे परमेश्वर इससे नफरत करने और यह देखने में हमारी सहायता कर कि एक पाप असीमित क्रोध के लायक है।

अब यह तीसरे सत्य के लिए आधार तैयार करता है, यदि परमेश्वर पवित्र है, और पाप घातक है, और हम यह देखने का प्रयास कर रहे हैं कि एक पापी मनुष्य पवित्र परमेश्वर के साथ कैसे वास कर सकता है, अब सत्य नंबर तीन अर्थपूर्ण बनता हैः बलिदान आवश्यक है। बलिदान आवश्यक है। मेरे साथ जल्दी से लैव्यवस्था 17 पद 11 में आएँ। यदि यह पद आपकी बाइबल में रेखांकित नहीं है, तो मैं आपको प्रेरित करना चाहूँगा कि आप इसे रेखांकित करें क्योंकि यह कुंजी है। जब आप लैव्यवस्था को पढ़ रहे थे, तो क्या आपने नहीं सोचा था कि हर लग लहू ही लहू क्यों है? यहाँ लहू छिड़क दे, वहाँ लहू फेंक दे, क्यों? लैव्यवस्था 17:11 क्यों को समझने की कुंजी है। देखें यह क्या कहती है, "क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिए प्रायश्चित किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है।" इसलिए लहू जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। जब बलिदान किया जाता है, तो लहू बहाया जाता है, तो यह किसका प्रतिनिधित्व करता है? मृत्यु। और इसलिए तस्वीर यह है कि यदि पाप घातक है और मृत्यु के लायक है, और परमेश्वर पवित्र है, उसकी पवित्रता और उसके न्याय के राज्य के लिए, पाप के प्रत्युत्तर में सर्वदा मृत्यु शामिल होगी, और इसलिए जब कभी हम लैव्यवस्था की पुस्तक में लहू को देखते हैं तो हम बलिदान की एक तस्वीर को देखते हैं जो दिखाती है कि पाप की मजदूरी को माफ कर दिया गया है। मौत आई है, और यह क्या है, यह उस बलि की तस्वीर है जिसकी पापी के स्थान पर मौत होती है।

और यह इस बात का आधार तैयार करता है कि प्रायश्चित का दिन क्या है। यहाँ पुराने नियम में प्रायश्चित के दिन वार्षिक बलिदान का प्रबन्ध था। वर्ष में एक बार – बाद के पुराने नियम के इतिहास में यह केवल

दिन के नाम से जाना जाता है। मेरा मतलब है, यही वो दिन है जब परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में रहना संभव होता है। उस दिन क्या होता है? कुछ अवयव, पहला, एक याजक पवित्रस्थान में प्रवेश करता है। महायाजक मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करता है। आपको याद है मिलापवाला तम्बू कैसे बनाया गया था, बाहरी आँगन, पवित्र स्थान, फिर एक परदा, एक परदा अति पवित्र स्थान को अलग करता था, और हारून के पुत्रों नादाब और अबीहू के बाद, इस्राएल के लोग इस बात से प्रसन्न थे कि सब लोगों के स्थान पर एक व्यक्ति अति पवित्र स्थान में प्रवेश करे, और वह इसे वर्ष में एक बार करने से प्रसन्न था।

और तस्वीर यह है, एक याजक, महायाजक सनी के वस्त्रों को पहनता, साधारण वस्त्र, जो सामान्य महायाजक के वस्त्र और याजक के वस्त्र से भी अलग थे, स्पष्ट है कि परमेश्वर की उपस्थिति में नम्रता की एक तस्वीर। एक अच्छा स्नान, स्वच्छ होना, वस्त्र पहनना, पवित्र वस्त्र जो परमेश्वर के पवित्रता को प्रतिबिम्बित करते हैं और नम्रता के साथ अन्दर जाना, और बाद में हम पाते हैं कि वे वस्त्र की छोर पर घण्टियाँ बाँधते थे ताकि जब महायाजक अति पवित्र स्थान में जाए, और परम्परा बताती है कि उसके टखनों से एक रस्सी बाँधी जाती थी जिसका दूसरा सिरा बाहर रहता था, और जब तक वह अन्दर चलता रहता तब तक घण्टियों की आवाज सुनाई देती रहती, यानि सब कुछ ठीक चल रहा था, परन्तु जब घण्टियों की आवाज रूक जाती तो इसका अर्थ है कि वह भी रूक गया, और यदि वह भी रूक गया, तो कोई अन्दर जाने की तो सोचेगा नहीं, और उसे रस्सी के सहारे बाहर खींच लिया जाता था।

क्या आप उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं? जैसे कि आप मिलापवाले तम्बू के बाहर चुपचाप खड़े हुए इन घण्टियों की आवाज को सुन रहे हैं, सोच रहे हैं कि क्या वह परमेश्वर की उपस्थिति से वापस लौटेगा, परमेश्वर की पवित्रता के प्रति श्रद्धा और भय। और याजक पवित्रस्थान में, मिलापवाले तम्बू में, अति पवित्र स्थान में दूसरे अवयव, निर्दोष मेमने के लहू के साथ जाता। वास्तव में यहाँ तीन पशु शामिल हैं, एक बछड़ा और दो बकरे। याजक के पापों के प्रायश्चित के लिए बछड़े को बलि किया जाएगा क्योंकि याजक स्वयं एक पापी है, और फिर दो बकरे, जिन में एक जीवित रहेगा और दूसरा नहीं, और बलि किए जाने वाले बकरे को अन्दर ले जाया जाता है। और तस्वीर यह है कि याजक बछड़े के लहू को अपने लिए अन्दर लेकर जाएगा, और बकरे को इस्राएल की सारी मण्डली के लिए, सुगन्ध धूप से अति पवित्र स्थान का भरना, और तस्वीर यह है कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में टकटकी नहीं लगा सकते हैं – आपको याद होगा वाचा के सन्दूक में परमेश्वर की व्यवस्था है, और उसके ऊपर सोने के करूब हैं और परमेश्वर की उपस्थिति करूबों के मध्य उसकी व्यवस्था के ऊपर विराजमान थी।

और याजक बछड़े के लहू और बकरे को अपने लिए और लोगों के लिए लेकर आता है, और वह इसे प्रायश्चित के ढकने के ऊपर छिड़कता है। यह साक्षीपत्र कहलाता था। याजक अन्दर जाता है और जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाता है। जैसे, वह अन्दर इधर–उधर नहीं घूमता था, न ही तस्वीरें खींचता था, न ही लोगों को ईमेल से सन्देश भेजकर यह बताता था कि अन्दर क्या हो रहा था। आप ऐसा नहीं करते हैं। आप अन्दर जाते हैं और तुरन्त बाहर। और उसे अन्दर जाकर साक्षीपत्र और प्रायश्चित के ढकने पर लहू छिड़कना है, क्यों? और तस्वीर यह है। परमेश्वर की उपस्थिति अपनी पवित्रता में अपनी व्यवस्था के ऊपर विराजमान। जब परमेश्वर की उपस्थिति अपनी व्यवस्था को देखती है, इसे इस्राएलियों ने तोड़ दिया है। लोगों ने इसका पालन नहीं किया। और परमेश्वर के इस्राएल के पापों को देखा, पापों को– पाप जैसे हमने बात की, मृत्यृ के लायक है। और तस्वीर यह है, परमेश्वर की पवित्रता और न्याय में, व्यवस्था तोड़ी गई है, व्यवस्था तोड़ने वालों पर क्रोध उण्डेला गया, और याजक इस तथ्य की तस्वीर के रूप में प्रायश्चित के ढकने पर लहू छिड़कता है कि मृत्यु हो चुकी है, और परमेश्वर इस्राएल के पापों को देख रहा है, और अपने क्रोध का अपने लोगों पर उण्डेलने की बजाय, उनके पापों के परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु होने की बजाय, परमेश्वर एक स्थानापन्न की मृत्यु से सन्तुष्ट हुआ, और विश्वास के समुदाय के स्थान पर पशु को मरते हुए चित्रित किया गया है, और इस प्रकार परमेश्वर पाप के प्रति धर्मी और पापियों के प्रति अनुग्रहकारी दोनों है। याजक इसी तरह लोगों के लिए प्रायश्चित करता है, और इसी प्रकार लोग परमेश्वर से मेल करने में सक्षम बनते हैं।

और जब वह बाहर आता है, दूसरा बकरा बाहर घूम रहा है, और याजक अपने हाथों को – पद 20–22 – अपने हाथों को बकरे के सिर पर रखता है और मण्डली के पापों को अंगीकार करता है, पापों को बकरे पर डालने की तस्वीर, और फिर एक व्यक्ति आकर उस बकरे को सदा के लिए जंगल में छोड़ देता है। जो अपराध का प्रतिनिधित्व करता है, लोगों के पाप के दण्ड को एक ऐसे स्थान पर छोड़ दिया जाता है जहाँ वह फिर कभी दिखाई नहीं देगा। यह एक महान तस्वीर है। पूर्णतः हटा दिया गया, कभी नहीं लौटेगा। और प्रायश्चित के दिन यही होता था।

तीसरा अवयव, इस बलि को दोहराने की आवश्यकता थी। यही एकमात्र समस्या है। प्रायश्चित किया जाएगा, लेकिन फिर अगले सप्ताह, अगले माह, वे फिर पाप करते हैं, और इसलिए अगले वर्ष भी प्रायश्चित करना आवश्यक है, अगले वर्ष, और अगले वर्ष, और इसी प्रकार हर वर्ष प्रायश्चित किया जाना है।

और इसके परिणामस्वरूप, प्रभाव, हाँ, यह अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह की तस्वीर थी, परन्तु इसका प्रभाव यह था कि यह लोगों के पाप का स्मरण दिलाती थी। यह उन्हें हर दिन, हर महीने, हर वर्ष

याद दिलाती, दिखाती थी कि उन्हें अब भी प्रायश्चित के दिन की आवश्यकता है। वर्ष में एक बार उन्हें याजक की आवश्यकता थी जो अन्दर जाकर उनके पापों के लिए प्रायश्चित करे। मेरे साथ इब्रानियों 10 पर आएँ, नये नियम के अन्त में। मेरे साथ इब्रानियों में आएँ, नये नियम के अन्त में, इब्रानियों 10:1. प्रायश्चित के दिन के बारे में नये नियम का यह कहना है। यह लोगों का पाप का स्मरण दिलाता था। यह दिखाता था कि वे एक स्थायी क्षमा की लालसा रखते थे, और प्रायश्चित का दिन स्थायी क्षमा को नहीं ला रहा था। इब्रानियों 10:1 में देखें, बाइबल कहती है – यह प्रायश्चित के दिन बलिदान की प्रणाली के बारे में बात कर रही है, "क्योंकि व्यवस्था, जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती। नहीं तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष" – इसे सुनें – "पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।" उन्हें निरन्तर याद दिलाया जाता था कि पापों के कारण वे परमेश्वर से दूर हैं और उन्हें निरन्तर प्रायश्चित के दिन की आवश्यकता है।

यह सब संकेत देता है – अब, याद रखें, यहाँ पुराना नियम हमें आने वाली महान वास्तविकताओं को दिखा रहा है और उनका संकेत दे रहा है, महान वास्तविकताएँ जिनके बारे में पीछे मुड़कर परमेश्वर की वाचा, बल्कि परमेश्वर के प्रबन्ध को देखने से हमें पता है, जो लैव्यवस्था 16 के प्रकाश में नये नियम की महिमामय तस्वीर है। प्रायश्चित के दिन वार्षिक बलिदान की बजाय, नया नियम हमें मसीह की मृत्यु में एक स्थायी बलिदान की तस्वीर देता है, और इब्रानियों की पुस्तक इसी के बारे में है। जिस प्रकार मिलापवाला तम्बू जिसे हमने पिछले सप्ताह देखा, आने वाली महान वास्तविकता एक तस्वीर, एक प्रारूप था, वैसा ही प्रायश्चित का दिन है और लैव्यवस्था में हम जो कुछ देखते हैं वह आने वाली महान वास्तविकता, मसीह की मृत्यु में स्थायी बलिदान का प्रारूप है। अध्याय 9 को देखें। एक अध्याय पीछे इब्रानियों 9:11 में आएँ। इसे सुनें, "परन्तु जब मसीह आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर, जो हाथ का बनाया हुआ नहीं अर्थात् इस सृष्टि का नहीं, और बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं पर अपने ही लहू के द्वारा, एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और कलोर की राख का अपवित्र लोगों पर छिड़का जाना शरीर की शुद्धता के लिए उन्हें पवित्र करता है, तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।"

और तस्वीर यह है। नया नियम, एक याजक का सांसारिक पवित्र स्थान में प्रवेश करना नहीं, बल्कि याजक का स्वर्गीय पवित्र स्थान में प्रवेश करना। यहाँ महत्वपूर्ण अन्तर है। पिछले सप्ताह हमने बात की कि मिलापवाला तम्बू एक महान वास्तविकता, यानि उस सत्य स्वर्गीय वास्तविकता का एक प्रारूप, उसकी एक नकल है। और इसलिए, जब बात मसीह और उसके द्वारा बलिदान चढ़ाने की बात आती है, उसने मन्दिर, हाथ से बनाए गए मिलापवाले तम्बू में प्रवेश नहीं किया। अध्याय 9:23 को देखें। इसे सुनें, "इसलिए अवश्य है कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन बलिदानों के द्वारा शुद्ध किए जाएँ, पर स्वर्ग में की वस्तुएँ स्वयं इनसे उत्तम बलिदानों के द्वारा शुद्ध की जातीं। क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में, जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे।"

यीशु ने, मिलापवाले तम्बू के अति पवित्र स्थान में नहीं, बल्कि सच्चे, महिमामय, पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में नम्र वस्त्रों में प्रवेश किया। दास का रूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। याजक ने स्वर्गीय पवित्र स्थान में प्रवेश किया, निर्दोष पशु के लहू के साथ नहीं, बल्कि निष्पाप मनुष्य के लहू के साथ। आप जानते हैं, याजक को अपने स्वयं के पापों को ढाँपने के लिए बछड़े का लहू चढ़ाना था। लेकिन यीशु के साथ ऐसा नहीं था, उस में कोई पाप नहीं था, इब्रानियों 4 का अन्त, इब्रानियों 5 का आरम्भ। उस में कोई पाप नहीं था जिसका प्रायश्चित किया जाए, और इसलिए वह हमारे लिए जाता है, किसी दूसरे का लहू लेकर नहीं परन्तु अपना स्वयं का लहू लेकर ताकि पुराने नियम के लोगों के समान ही, जो इन बलिदानों के लहू को देखते थे, और इन बलिदानों का लहू सौंपते थे, उसी प्रकार उनका परमेश्वर के साथ मेल हो और उनके पापों का प्रायश्चित हो जाए।

अब हमारी तस्वीर यह है, परमेश्वर हमारे जीवन के पापों को देखता है। वह हमारे जीवनों में देखता है कि उसकी व्यवस्था को तोड़ा गया है और पाप की मजदूरी क्या है? मृत्यु है। अनन्त मृत्यु है। वह हमारे जीवनों में पाप को देखता है, और फिर भी, जब हम हमारे हृदयों पर छिड़के गए मसीह के लहू पर विश्वास करते हैं, तब हमारे जीवनों के पाप को देखकर, हमें मृत्युदण्ड देने की बजाय, परमेश्वर अपने पुत्र के बलिदान से सन्तुष्ट होता है, और पाप की मजदूरी मेरी और आप की जगह पूरी तरह से उस पर उण्डेल दिया जाता है, और उस का लहू हमें आने वाले क्रोध से बचाता है, और यह एक ऐसा सिद्ध बलिदान है जिसके दोहराव की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। यह बलिदान सदा के लिए है। इब्रानियों 10:11, "हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी

दूर नहीं कर सकते, बार–बार चढ़ाता है। परन्तु यीशु पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।"

वह परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, यह इस बात का प्रतीक है कि यह बलिदान अब पूर्ण है, उस समय की प्रतीक्षा कर रहा है जब उसके शत्रु उसके चरणों की चौकी बन जायेंगे, क्योंकि एक ही बार में उसने सदा के लिए सिद्ध बलिदान चढ़ाया – सदा के लिए, पवित्र किए जाने वाले लोगों के लिए। यह एक ऐसा बलिदान है जो सर्वदा के लिए है, और इसके परिणामस्वरूप, यह एक ऐसा बलिदान है जो हमारे सारे पाप को दूर करता है। आप इब्रानियों 10:17 को पढ़ सकते हैं जहाँ लिखा है, "मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूँगा। और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।" याद है बचने वाला बकरा, दूसरा बकरा? पापों को उस पर लाद दिया गया, और उसे हमेशा के लिए जंगल में छोड़ दिया गया, भाइयो और बहनो, आपका अतीत चाहे कितना ही गहरा और काला या गन्दा हो, जब आपके पापों को मसीह पर डाल दिया जाता है, तो वे आप से उतनी दूर हो जाते हैं जितना पूर्व, पश्चिम से दूर है, और उन्हें फिर कभी आपके विरूद्ध नहीं गिना जाएगा – फिर कभी उन्हें आपके विरूद्ध नहीं गिना जाएगा।

यशायाह 43:25, परमेश्वर कहता है, "मैं यहोवा हूँ, और मैं तेरे पापों को स्मरण न करूँगा।" कभी नहीं, ऐसा नहीं है कि उसकी याददाश्त कमजोर है और वह भूल जाता है। बल्कि यह कि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में उस पाप को ले लिया। आपने पिछले साल अपने जीवन में सब कुछ बदल दिया, पाँच वर्ष पूर्व या दस वर्ष पूर्व, यदि आपको पीछे जाने और उस कार्य को दोबारा करने का अवसर मिलता, तो आप इस बात, उस बात, या जिस बात के बारे में इच्छा रखते हैं कि काश वह कभी न होती, भाइयो और बहनो, सर्वशक्तिमान पवित्र परमेश्वर की आँखों के सामने वह दूर हो चुकी है। वह जा चुकी है। वह जा चुकी है। हमारा अपराध दूर हो चुका है। उसका लहू – हमारे हृदयों पर छिड़का हुआ है, और आप इसके बारे में सोचें, हम और हमारे पाप, मैं और मेरा पाप, आप और आपके पाप, पवित्र परमेश्वर के सामने मसीह के लहू के द्वारा अब आप अपराधी नहीं हैं। हमारा अपराध दूर हो चुका है, और हमारा विवेक शुद्ध है। अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। इसलिए भाइयो और बहनो, जब शत्रु आपके अतीत के पाप का बोझ आप पर डालने का प्रयास करता है, पिछले सप्ताह का पाप, पिछले वर्ष का पाप, 20 वर्ष पूर्व का पाप, और आप अब भी उसका बोझ उठा रहे हैं, भाइयो और बहनो, अब उस बोझ को उठाने की आवश्यकता नहीं है। आप स्वतंत्र हैं, और आपका अपराध दूर हो चुका है, और परमेश्वर के सामने आप निष्कलंक और शुद्ध हैं, और आपकी स्थिति पवित्रता की है। दूसरे के बलिदान के कारण आप पवित्र हो गए हैं।

और यहाँ की खूबसूरती, लैव्यवस्था इसी की ओर संकेत कर रही है। हाँ, परमेश्वर सर्वोच्च रूप से पवित्र है, और पाप अत्यधि घातक है, और इस कारण, बलिदान अनिवार्य है। जब हम इन सब को एक साथ मिलाते हैं तो लैव्यवस्था के अन्त में पुकार एक उद्धारकर्ता के लिए है, और यहाँ लैव्यवस्था का चौथा सत्य, यीशु योग्य है। हमें उसकी आवश्यकता है। वह हमारी आराधना का केन्द्र और हमारी आत्माओं की सन्तुष्टि है। हमारे लिए एक महायाजक है जो निरन्तर हमारा प्रतिनिधित्व करता है। इब्रानियों में एक और स्थान, आपको इसे देखना है। इब्रानियों 7:23, आप जानते हैं, मेरा सोचना है हम में से कुछ लोग, संभवतः बहुत से लोग, यदि अधिकाँश बार नहीं तो बहुत बार, जब हम यीशु मसीह के क्रूस पर मरने, कब्र से जी उठने, पिता के पास उठा लिए जाने और पिता के दाहिने बैठ जाने के बारे में सोचते हैं, तो हम सोचते हैं कि यीशु आराम कर रहा है, जो हो रहा है उसे देख रहा है। यह सच नहीं है। क्या आप इसे समझते हैं? इब्रानियों 7:23, "वे तो बहुत बड़ी संख्या में याजक बनते आए, इसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती थी; पर यह युगानुयुग रहता है, इस कारण उसका याजक पद अटल है। इसीलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है," – इसे रेखांकित करें – "क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।"

इस पल, मसीहियो, मसीह पिता के दाहिने हाथ बैठकर आपके लिए विनती कर रहा है, बिचवई कर रहा है, आपके लिए विनती करने के लिए जीवित है। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि इस सप्ताह जब आप पाप करने की परीक्षा का सामना करते हैं, तो स्वर्ग में आपके लिए एक उद्धारकर्ता है जो उस पल आपको वह देगा जो उस पाप पर जय पाने के लिए जरूरी है। इस सप्ताह जब आप ऐसी परख का सामना करते हैं जिसकी इस पल आप अपेक्षा नहीं कर रहे हैं, इस सप्ताह जब आप ऐसी खबर सुनते हैं जिसकी आपने अपेक्षा नहीं की थी, इसे जानें, स्वर्ग में आपके लिए एक उद्धारकर्ता है जो आपके लिए विनती कर रहा है और वह आप पर उस सामर्थ और शक्ति को उण्डेलने के लिए तैयार है जिसकी उस खबर के बीच में आपको जरूरत है, और हर दिन के हर एक पल आपके लिए पिता के सामने एक महायाजक है जो आपके लिए विनती करने के लिए जीवित है। यह महिमामय सत्य है, और यथार्थ यह है कि जब वह दिन आता है, और आप यहाँ अपनी आखरी साँस लेते हैं, और आप पवित्र परमेश्वर के सामने खड़े होंगे, इसे जानें, आप उस पर भरोसा रखते हैं और उसके लहू ने अब आपके हृदय को ढांप रखा है। आप जान सकते हैं कि उस दिन आपके लिए एक विनती करने वाला है, और आपके लिए डरने का कोई कारण नहीं है – कोई कारण नहीं है।

कल कोई व्यक्ति मुझे जोसफ स्टोन के बारे में बता रहा था। इस भाई ने रोमानिया में सताव के बीच वर्षों तक पासबानों को प्रशिक्षित किया था, और वह इन लोगों से कहता कि वह उन लोगों को प्रशिक्षण दे रहा

है जो रोमानिया में जायेंगे और लगभग निश्चित है कि वे शहीद हो जायेंगे। वह उन से कहता, भाइयो, इसे कभी न भूलना कि जब तुम अपने प्रभु के लिए शहीद होते हो, और स्वर्ग में परमेश्वर के सामने खड़े होने पर जब वह पूछता है कि मैं तुम्हें अन्दर क्यों आने दूँ, तो एक पल के लिए भी यह मत सोचना कि आपका उत्तर है आपके शहीद होने के कारण। मैं जानता हूँ कि उस दिन तुम्हारा उत्तर वही होगा जो हम सब का है। वह होगा, मुझ में कुछ नहीं है। मुझे ढाँपने के लिए मैं उसके लहू पर भरोसा करता हूँ। इसलिए, मसीहियो, इसमें जीएँ। इस तथ्य में आनन्दित हों कि परमेश्वर के सामने आपकी स्वीकृति, आपकी पहुँच, परमेश्वर के लिए आपके कार्य पर आधारित नहीं है, बल्कि किसी दूसरे के बलिदान पर आधारित है।

आप कहेंगे, तो ठीक है, फिर तो मैं अपनी मर्जी से जीऊँगा। नहीं, बिल्कुल नहीं। लैव्यवस्था 16 का सत्य यहीं पर आता है, इब्रानियों हमें दिखाती है कि यह विचार पूर्णतः बनावटी और निरर्थक है कि हम यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करें लेकिन प्रभु के रूप में उसका पालन न करें, क्यों? क्योंकि जब हम मानते हैं कि हमारा एक महायाजक है जो हमारा प्रतिनिधित्व कर रहा है, तो फिर हम यह भी मानेंगे कि हमारा एक मेमना है जो अनन्तकाल के लिए हम पर राज्य करेगा, और हमारे जीवन उसी के हैं। वे उसके हैं, और वे पल–पल, हर पल उस में आनन्दित होते हैं, चढ़ाए गए बलिदान के प्रकाश में पाप का विचार असहनीय है, और हम अपने याजक द्वारा दी गई सामर्थ के द्वारा उस से दूर भागते हैं। यह लैव्यवस्था को पढ़ने के योग्य बनाता है।